रामायण में पर्यावरण चिंतन

डॉ. वेद प्रकाश

रामायण आदि कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत ऐसी महत्वपूर्ण रचना है जिसका विस्तार विविध आयामी है। चौबीस हजार श्लोक, पाँच सौ सर्ग तथा सात काण्डों में इस महाकाव्य का विस्तार मिलता है। जिसमें जीवन- जगत के अनेक महत्वपूर्ण विषयों की विस्तृत व्याख्या है। रामायण में इतिहास, दर्शन, भूगोल, राजनीति तथा मनोविज्ञान के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नाम से प्रसिद्ध चारों पुरुषार्थों का सांगोपांग निरूपण मिलता है। जीवन- जगत का कोई कोना ऋषि दृष्टि से अछूता नहीं रहा है। रामायण के महत्व का उद्घाटन प्रथम अध्याय के चौबीसवे श्लोक में इस प्रकार मिलता है-

धर्मार्थकाममोक्षाणाम् साधनं च द्विजोत्तमा:।
श्रोतव्यं च सदा भक्तया रामायणपरामृतम्।[1]

अर्थात् रामायण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन तथा परम अमृत रूप है अत: सदा भक्तिभाव से उसका श्रवण करना चाहिए। रामायण एक ऐसी पुण्य सलिला है, जिसमें अवगाहन करने से व्यक्ति भ्रम, भय, चिंता तथा विविध आयामी अवसादो से मुक्त होकर सद्गति की ओर अग्रसर होता है।

मनुष्य को समस्त जीव सृष्टि में श्रेष्ठ माना गया है। इस जीव की निर्मिति से पूर्व परमात्मा ने उसके जीवन की सुचारूता तथा सुविधा हेतु अग्नि, जल, वायु तथा प्रकृति आदि से संबंधित पर्यावरण की रचना की। भारतीय चिंतन परंपरा में अनेक स्थानों पर उपर्युक्त बातों की पुष्टि अथवा चर्चा मिलती है। ऋग्वेद के नौवें मंडल के दूसरे सूक्त में कहा गया है-

आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तम:रू।
आ योनि धर्णसि: सद:।।[2]

अर्थात् परमात्मा कोटि- कोटि ब्रह्माण्डों का आधार है, उसी के शासन में द्युलोक, भूलोक, स्वलोक इत्यादि लोक लोकान्तर परिभ्रमण करते हैं, वही इस चराचर ब्रह्मांड का आधार है।

आज हमें पुन: इस बात को समझने की आवश्यकता है कि विज्ञान के अति आच्छादन्न में हमने यह भूलाने का प्रयास किया है कि इस चराचर ब्रह्मांड का आधार मनुष्य अथवा विज्ञान नहीं है अपितु परमात्मा है। उसी ने मनुष्य के जीवनयापन हेतु पर्यावरण तथा प्रकृति की व्यवस्था-संरचना की है। ऋग्वेद के नौवें मण्डल के चौथे सूक्त में कहा गया है-

अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि।
सूनोर्वत्सस्य मातर:।।[3]

अर्थात् गौ अपने बच्चे को दुग्ध पिलाकर जिस प्रकार परिपुष्ट करती है,उसी प्रकार प्रकृति अपने इस कार्यरूप ब्रह्मांड को अपने परमाण्वादी दुग्धों द्वारा पुष्ट करती है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति इस जगत का उपादान कारण है। परमात्मा निमित्त कारण है और यह संसार वत्स समान प्रकृति और वृषभरूपी पुरुष (परमात्मा) का कार्य है।

'पर्यावरण' शब्द का अर्थ है—अड़ोस पड़ोस, चारों ओर की स्थिति, आसपास की घटनाएं, रीति-व्यवहार आदि। सामान्यत: कहा जा सकता है कि पर्यावरण एक ऐसी संकल्पना है जो किसी जीवधारी को उसकी आवश्यकता के अनुरूप आवरण (वातावरण) प्रदान कर उसके सुखद जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। अपने विकास क्रम में मनुष्य ने प्रकृति में विकृति का प्रयास करना आरंभ किया। अधिकाधिक दोहन, अधिकाधिक उत्पादन और अधिकाधिक लालसा पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनती चली गई। वनों की अंधाधुंध कटाई, नदी क्षेत्रों में अतिक्रमण, पहाड़ों की कटाई, महानगरों का विस्तार तथा औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में विषैली तथा हानिकारक गैसों का उत्सर्जन आदि से पर्यावरण की समस्या विकराल होती जा रही है। आज आंकड़े बताते हैं कि वन क्षेत्र की दृष्टि से दुनिया में भारत का दसवां स्थान है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.87 लाख वर्ग किलोमीटर है।जिसमें वन क्षेत्र केवल 7.12 लाख वर्ग किलोमीटर ही है। आज भारत की आबादी लगभग एक सौ तीस करोड़ है, जिसमें से लगभग 40 करोड प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वनों पर आश्रित हैं। भारत वर्ष के लगभग 6.

डॉ. वेदप्रकाश, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
ved0550@gmail.com

50 लाख गावों में से दो लाख गांव जंगलों में व इनके आसपास बसते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से विचार करने पर आंकड़ों के अनुसार भारत की जीडीपी में वनों का 0.9 फीसद योगदान है। इनसे ईंधन के लिए सालाना 12.8 करोड टन लकड़ी प्राप्त होती है। प्रतिवर्ष 4.1 करोड़ टन टिम्बर मिलता है। इसके अतिरिक्त नीम, तुलसी, पीपल, महुआ, चंदन, तेल तथा विभिन्न औषधीय पौधे भी प्राप्त होते हैं। विडंबना तथा चिंता का विषय यह है कि पर्यावरणीय असंतुलन से कड़ाके की ठंड, बर्फबारी, अति वर्षा, सूखा, बाढ़, अत्यधिक गर्मी तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसे संकट पैदा हो रहे हैं। जो जीव सृष्टि के लिए घातक हैं। अर्थात ईश्वर प्रदत्त आवरण जो जीव के लिए नितांत आवश्यक है वह विकृत हो रहा है,ध्वस्त हो रहा है। जन जागरूकता तथा जनभागीदारी के प्रयास आरंभ हो रहे हैं। जिससे पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन किया जा सके। राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इस विषय को महत्वपूर्ण सरोकार मानते हुए कार्य योजना बनाई हैं और उन्हें क्रियान्वित भी किया जा रहा है। आज भिन्न-भिन्न रूपों में प्राकृतिक आपदाएं दस्तक दे रही हैं। हम सभी की सजगता मानवता के कल्याण हेतु अनुकूल वातावरण बना सकती है।

विश्व चिंतन के आदि स्रोत वैदिक ग्रंथ हैं। ऋग्वेद विश्व का पहला ग्रंथ माना जाता है, जिसमें जीव-जगत के अनेक विषय वर्णित हुए हैं। वेदों में पर्यावरण चिंतन की भी गंभीरता अनेक स्थानों पर मिलती है। जीव-प्रकृति तथा पर्यावरण का अभिन्न हिस्सा है। इस प्रकृति तथा पर्यावरण से ही जीव का जीवन संभव है। इस विचार को महत्वपूर्ण मानते हुए आदि कवि वाल्मीकि ने अनेक स्थानों पर पर्यावरण चिंतन तथा प्रकृति के सौंदर्य को प्रस्तुत किया है। जल- जीव का उत्पत्ति स्थल है।आदि कवि ने रामायण में अनेक स्थानों पर तुंगभद्रा, मंदाकिनी, तमसा, सरयू, सोनभद्र, सोन, कोशिकी, गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी, गंडकी, वेदश्रुति, गोमती, मालिनी, शरदण्डा, सुदामा, नर्मदा, शैलोदा, शिलावहा, सरस्वती, कुलिंगा तथा उतानिका आदि नदियों की चर्चा की है।उनके आराध्य एवं ग्रंथ के नायक श्रीराम जिस- जिस दिशा में भी जाते हैं, वहां नदियों के दर्शन होते हैं और वे नदी स्नान तथा पूजन के द्वारा इन जल स्रोतों के प्रति अपना सम्मान तथा समर्पण व्यक्त करते हैं। अयोध्याकाण्ड के पचपनवे सर्ग में यमुना जी से सीता जी प्रार्थना कर रही हैं—

कालिंदीमथ सीता तु याचमाना ताञ्जिलि:[4]

अर्थात् सुंदरी सीता हाथ जोड़कर यमुना जी से प्रार्थना कर रही थी, इतने में ही वे दक्षिण तट पर जा पहुंची। इसी प्रकार, मंदाकिनी नदी के सौंदर्य का उद्घाटन मिलता है-

सुरम्यमासाद्य तु चित्रकूटं
नदी च ता माल्यवती सुतीर्थाम्।[5]

अर्थात् चित्रकूट पर्वत बड़ा ही रमणीय था। वहां उत्तम तीर्थों से सुशोभित माल्यवती नदी बह रही थी, जिसका बहुत से पशु-पक्षी सेवन करते थे। उस पर्वत और नदी का सानिध्य पाकर श्री रामचंद्र जी को बड़ा हर्ष और आनंद हुआ। वह नगर से दूर वन में आने के कारण होने वाले कष्टों को भूल गए। उत्तरकाण्ड में नर्मदा के सौंदर्य का विशद् वर्णन है। सरिताओं में श्रेष्ठ नर्मदा परम सुंदरी प्रतीत होती हैं। हंस, चक्रवाक् तथा अन्य अनेक जल जीव वहाँ सानंद क्रीड़ा कर रहे हैं। नर्मदा के सौंदर्य को देखकर रावण कहता है—

प्रख्याय नर्मदा सोड्थ गंग्डेयमिति रावण:।[6]

ये साक्षात् गंगा हैं—ऐसा कहकर दशानन रावण ने नर्मदा की प्रशंसा की और उसके दर्शन से हर्ष का अनुभव किया। बालकाण्ड के पैंत्तीसवे सर्ग में देव नदी गंगा की उत्पत्ति, उसकी श्रेष्ठता आदि का विशद् वर्णन है। गंगा को पृथ्वी, आकाश तथा पाताल तीनों को पवित्र करने वाली माना गया है—

ते गत्वा, जाह्नवी सरिता श्रेष्ठा।[7]

अर्थात् बहुत दूर का मार्ग तय कर लेने पर दोपहर होते-होते उन सब लोगों ने मुनि जन सेवित, सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा जी के तट पर पहुंचकर उनका दर्शन किया। कहने का भाव यह है कि रामायण में अनेक स्थलों पर नदियों के सौंदर्य, प्रदूषण रहितता तथा उनके महत्व का उद्घाटन मिलता है। जिससे यह स्पष्ट है कि हमें वर्तमान तथा भविष्य संवारने के लिए इन महत्वपूर्ण जल स्रोतों का वंदन करते रहना होगा। यह चिंतन आज मानव ने भुला दिया है। देव नदियां आज प्रदूषण का शिकार हैं। पर्यावरण का बड़ा एवं महत्वपूर्ण घटक जल अनेक रूपों में प्रदूषित हो रहा है।

पेड़-पौधे तथा वन संपदा पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करने एवं जीवों के लिए आवश्यक वायु, औषधि, फल, फूल आदि के प्रदाता हैं। रामायण में भारुण्ड, दण्डक, मत्तंग, चेत्ररथ, लोध्र व क्रौंचारण्य आदि वनों की चर्चा मिलती है। रामायण के विभिन्न काण्डों में सैकड़ों तरह के फल-फूल वाले वृक्षों एवं वनस्पतियों की चर्चा है। अयोध्याकाण्ड के चौरानवे सर्ग में लिखा है—

आम्रजम्ब्वसनैर्लोध्रै: प्रियालै:,प्रियंका पुष्पत्ययं गिरि:।।[8]

अर्थात् आम, जामुन, असन, लोध, कटहल, धव, अंकोल,भव्य, तिनिश, बेल, आंवला, कदंब, बेर, धन्वन, बीजक आदि घनी छाया वाले वृक्षों से जो फूलों और फलों से लदे होने के कारण मनोरम प्रतीत होते थे, व्याप्त हुआ यह पर्वत अनुपम

शोभा का पोषण एवं विस्तार कर रहा है। यह चित्रकूट की शोभा का वर्णन-प्रसंग है। अयोध्याकाण्ड के पचपनवे सर्ग में सीता जी के द्वारा श्यामवट की पूजा का वर्णन मिलता है। जिसमें वे उस महावृक्ष को नमस्कार करते हुए परिक्रमा करती हैं और कहती हैं-

न्यग्रोधं समुपागम्य विदेही, नमस्तेस्तु महावृक्ष, पर्यगच्छन्मनस्विनी।।[9]

अर्थात् वट के समीप पहुंचकर विदेहनंदिनी सीता ने उसे मस्तक झुकाया और इस प्रकार कहा—श्महावृक्ष! आपको नमस्कार है। आप ऐसी कृपा करें, जिससे मेरे पतिदेव अपने वनवास-विषयक व्रत को पूर्ण करें तथा हम लोग वन से सकुशल लौटकर माता कौशल्या तथा यशस्विनी सुमित्रा देवी का दर्शन कर सकें। इस प्रकार कहकर मनस्विनी सीता ने हाथ जोड़े हुए उस वृक्ष की परिक्रमा की। अभिप्राय यह है कि वाल्मीकि जी ने वृक्षों को जीवनदायक होने के साथ-साथ वरदायक के रूप में भी स्थापित किया है और यह संदेश दिया है कि मनुष्य सदैव उनका रक्षण करें। किंतु आज मनुष्य वृक्षों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है। जिससे पर्यावरण में प्रदूषण और असंतुलन पैदा हो रहा है।

पर्वत पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक हैं। दूरदृष्टा ऋषि ने प्रस्रवणगिरि, महेंद्र, विंध्य, मेरू, कैलाश, मंदराचल, उदय, मैनाक, वाराह, सोमगिरि, मलय, चित्रकूट तथा लंम्ब आदि पर्वतों का भी वर्णन किया है। अयोध्याकाण्ड के चौवनवे सर्ग में महामुनि भारद्वाज श्रीराम से कहते हैं—

चित्रकूट इति ख्यातो, कपालशिरसा सह।[10] अर्थात् चित्रकूट नामक पर्वत बहुत मनोहर है। उस पर बहुत से लंगूर विचरते रहते हैं। वह पर्वत चित्रकूट नाम से विख्यात है और गंधमादन के समान मनोहर है। जब मनुष्य चित्रकूट के शिखरों का दर्शन कर लेता है तब कल्याणकारी पुण्य कर्मों का फल पा लेता है और कभी पाप में मन नहीं लगाता है।

नदी, पर्वत तथा वृक्षों की भांति बंदर-भालू, कीट-पतंगे, पशु-पक्षी भी पर्यावरण के महत्वपूर्ण अंग हैं। रामायण में वाल्मीकि जी ने कई स्थानों पर इनसे संवाद दिखाया है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य मानवेतर जीवों के रक्षण में भी संलग्न हो, जिससे पर्यावरण का संतुलन बना रह सके। अरण्यकाण्ड के साठवे सर्ग में लिखा है कि—

अस्ति कच्चित्त्वया दृष्टा, न ते भयम्।[11] अर्थात् एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष के पास दौड़ते हुए वे पर्वतों, नदियों और नालों के किनारे घूमने लगे शोक से समुद्र में डूबे हुए श्री रामचंद्र जी विलाप करते-करते वृक्षों से सीता के विषय में पूछने लगे—वे कदंब, अर्जुन, कुटज, अशोक, ताल, जामुन, कनेर, आम, कदम्ब, साल, कटहल और अनार आदि वृक्षों को देखकर उनके पास गए और पूछते फिरे। इसी प्रकार वे हिरण, गजराज व व्याघ्र आदि सभी से भी उनका पता पूछते हैं, संवाद करते हैं। किष्किंधाकाण्ड में वानर, भालू आदि से भी मैत्री करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मानवेतर जीव भी मनुष्य के लिए बहुत सहायक हो सकते हैं।

स्पष्टतः महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत रामायण आदि ग्रंथ है,जिसमें दूरदृष्टा ऋषि ने पर्यावरण चिंतन के विविध आयामों को रूपायित किया है। आज जब समूची मानवता पर्यावरण संकट के भिन्न-भिन्न रूपों से जूझ रही है,तब आदि काव्य रामायण में वर्णित पर्यावरण चिंतन हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।

संदर्भ

1. रामायण-प्रथम अध्याय, 24 वा श्लोक
2. ऋग्वेद-9/2/2
3. ऋग्वेद-9/19/4
4. रामायण-अयोध्याकाण्ड- 55/21
5. रामायण-अयोध्याकाण्ड-56/35
6. रामायण-उत्तरकाण्ड-31/26
7. रामायण-बालकाण्ड-35/7
8. रामायण-अयोध्याकाण्ड-94/8, 9, 10
9. रामायण- अयोध्याकाण्ड-55/24, 25
10. रामायण-अयोध्याकाण्ड-54/29, 30
11. रामायण-अरण्यकाण्ड-60/12-25